# शिखर 4

## पाठ 14. क्षमादान

### पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत नाटक की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में साहस, माता के प्रति प्रेम तथा वीरों के प्रति सम्मान की भावना को भरना है।

### पाठ का सारांश

एक वीर बालक मालवजी शिवाजी की हत्या करना चाहता है मगर तानाजी उसको रोक लेते हैं। पूछने पर मालवजी शिवाजी को अपने परिवार के बारे में बताता है। शिवाजी दिखावटी गुस्से में आकर मालवजी को मृत्युदंड की सज़ा सुनाते हैं। मालवजी मरने से पहले अपनी माता से मिलने की इच्छा व्यक्त करता है। शिवाजी की आज्ञा पाकर वह अपनी माता से मिलने तो जाता है परंतु उसकी हिम्मत नहीं पड़ती और वह माँ से बिना मिले ही लौट आता है। शिवाजी के पास वापस आकर वह अपनी माता से न मिलने का कारण बताता है। शिवाजी मालवजी की वीरता एवं साहस पर मुग्ध थे। शिवाजी मालवजी से कहते हैं कि वे भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए चिंतित रहते हैं। शिवाजी मालवजी का अपराध क्षमा कर देते हैं। मालवजी भी मातृभूमि की सेवा करने का प्रण लेता है।

### अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को शिवाजी के बारे में बताएँ। बताएँ कि शिवाजी बहुत वीर योद्धा ही नहीं भारत का गौरव भी थे।

- बच्चों से पाठ संबंधी चर्चा करें।
- पूछें, यदि वे शिवाजी की जगह होते तो मालवजी को क्या दंड देते?
- बच्चों में साहस, देश-प्रेम की भावना का विकास करें।
- पूछें, क्या आप अपनी माँ की हर बात मानते हो, यदि नहीं, तो समझाएँ कि माँ का कहना मानना चाहिए तथा माँ की सेवा करनी चाहिए।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।